21. यूरोपीय कंपनियों का आगमन (Arrival of European Companies)

- भारत में यूरोपवासियों के आने के क्रम में सर्वप्रथम पुर्तगीज (पुर्तगाली) थे, इसके बाद क्रमशः डच, अंग्रेज, डेनिस और फ्रांसीसी आए।
- अंग्रेज डच के बाद भारत आये थे परंतु अंग्रेजों की ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी से पहले ही हो चुकी थी।

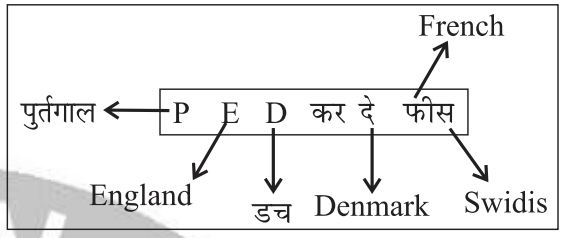

यूरोपिय कम्पनियां एवं स्थापना वर्ष					
क्र.स.	कंपनी	देश	स्थापना वर्ष	गवर्नर कोठी/फैक्ट्री	स्थल/प्रथम
1.	पुर्तगाली ईस्ट इंडिया कंपनी (इस्तादो द इंडिया)	पुर्तगाली	1498 ई.	एफ.डी. अल्मेडा	कालीकट (1498)
2.	अंग्रजी ईस्ट इंडिया कंपनी (दि गवर्नर एंड कम्पनी ऑफ मर्चेंट्स ऑफ लंदन ट्रेडिंग इन टू दि ईस्ट इंडीज)	अंग्रेज	1600 ई.	सर टॉमस रो	सूरत (1613)
3.	डच ईस्ट इंडिया कंपनी	डच	1602 ई.	कार्नेलियस डेहस्तमान	मसूलीपट्टनम (1605)
4.	डेनिश इस्ट इंडिया कंपनी	डेनिश	1616 ई.	विर्निचओ	ट्रांकेबर (1620)
5.	फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया (कंपनी द इंडस ओरिचंटल)	फ्रांसीसी	1664 ई.	जोन बैप्टिस्ट कोल्बर्ट/मार्टिन	सूरत (1668)
6.	स्वीडिश ईस्ट इंडिया कंपनी	स्वीडिश	1731 ई.	विलियम-यूसेलिंक्स	गोहनबर्ग

➢ पुर्तगाल ईस्ट इंडिया कम्पनी

- इसकी स्थापना 1498 में हुई।
- 17 May 1498 को पुर्तगाली नाविक वास्कोडिगामा गुजराती पथ प्रदर्शक अब्दुल मजीद की सहायता से केरल के कालीकट बन्दरगाह पर पहुंचा। वहाँ के शासक जमोरिन ने उसका भव्य स्वागत किया और उसकी जहाज को मसालों से भर दिया। इन मसालों के अतिरिक्त वास्कोडिगामा कुछ और मसाले खरीदे थे जिसे वह यूरोप में बेच कर 60 गुना मुनाफा कमाया।
- वास्कोडिगामा पुर्तगाल के शासक डॉन इनरीक के प्रतिनिधि के रूप में भारत आया था।
- 1502 ई. में वास्कोडिगामा पुनः भारत आया।
- 1503 ई. में पुर्तगालियों ने कोची का किला जीत लिया।
- पुर्तगाल ने फ्रांसिस-डी-अल्मेडा को गवर्नर नियुक्त किया। अल्मोड़ा नौसेना को मजबूत करने के लिए शांत जल की नीति (Blue Water Policy) को अपनाया, किन्तु यह वास्तविक रूप से गवर्नर के पद को नहीं सम्भाल सका और इसके स्थान पर 1509 ई. में अल्बुकर्क को पुर्तगाली गवर्नर नियुक्त किया गया।
- अल्बुकर्क को ही पुर्तगाली साम्राज्य का वास्तविक गवर्नर माना जाता है।
- इसने बीजापुर के शासक से गोवा 1510 ई. में जीत लिया।
- 1511 ई. में इसने मलक्का पर कब्जा कर लिया तथा 1515 ई. में इसने फारस की खाड़ी में स्थित हॉरमुज बंदरगाह को युद्ध में जीत लिया।
- इसका विजय नगर शासक कृष्ण देव राय के साथ अच्छा संबंध था।
- अल्बुकर्क ने पुर्तगालियों की संख्या बढ़ाने के लिए पुर्तगालियों को भारतीय महिलाओं से शादी करने के लिए प्रेरित किया।
- अल्बुकर्क सती प्रथा का विरोध करने वाला प्रथम यूरोपीय व्यक्ति था।
- 1612 ई. में पुर्तगालियों को स्वैली के युद्ध में अंग्रेजों ने थॉमस बैस्ट के नेतृत्व में हराया था।
- पुर्तगालियों द्वारा हुगली को बंगाल की खाड़ी में समुद्री लुटपाट के लिए अड्डे के रूप में इस्तेमाल किया जाता था।
- पुर्तगाली सबसे पहले भारत आए थे और सबसे बाद में 1961 ई. में भारत छोड़कर गए।

- पुर्तगालियों ने ही भारत में सर्वप्रथम तम्बाकू तथा आलू की खेती प्रारम्भ करवायी थी।
- सर्वप्रथम भारत-जापान व्यापार प्रारम्भ करने का श्रेय इन्हें ही प्रदान किया जाता है।
- पुर्तगालियों ने ही भारत में सर्वप्रथम 1556 ई. में गोवा में प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना किया।
- भारत में गोथिक स्थापत्य कला की स्थापना का श्रेय पुर्तगालियों को दिया जाता है।

➢ डच ईस्ट इंडिया कम्पनी (1602)

- भारत आने वाली दूसरी यूरोपीय शक्ति डच ही थे।
- ये नीदरलैंड या हॉलैंड के निवासी थे।
- 1596 ई. में भारत आने वाला प्रथम डच नागरिक कारनेलिस डी हाउटमैन था।
- डच ने 1605 ई. में मसूलीपट्टनम में अपनी पहली व्यापारिक कोठी स्थापित की तथा पुलिकट में अपनी दूसरी व्यापारिक कोठी एवं सूरत में अपनी तीसरी व्यापारिक कोठी स्थापित की।
- डच ईस्ट इंडिया कंपनी ने 1632 ई. में अपनी फैक्टरी पटना में भी स्थापित की थी।
- 1759 के वेदरा के युद्ध में अंग्रेजों ने डचों को बुरी तरह से पराजित कर दिया और उनके सभी व्यापारिक कोठियों पर अधिकार कर लिया।
- इस युद्ध में अंग्रेजी सेना का नेतृत्व क्लाइव ने किया था।
- डच भारत से अधिक इण्डोनेशिया से व्यापार करने में रूचि रखते थे।
- भारत को भारतीय वस्त्रों के निर्यात का केंद्र बनाने का श्रेय डचों को जाता है।

➢ ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी

- इसकी स्थापना 31 दिसम्बर 1600 को महारानी एलिजाबेथ ने एक शाही फरमान देकर 15 वर्षों के लिए किया।
- शुरूआत में ईस्ट इंडिया कंपनी के साझेदारों की संख्या 217 थी।
- जिस समय ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना हुई, उस समय मुगल शासक अकबर था।
- ब्रिटिश कंपनी ने 1608 ई. में भारत के पश्चिमी तट सूरत में व्यापारिक केंद्र खोलने का प्रयास किया।
- 1613 ई. में सूरत में स्थापित कारखाना अंग्रेजों का प्रथम स्थायी कारखाना था।
- 1639 ई. में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी ने मद्रास को भाड़े पर ले लिया और यहाँ फोर्ट सेण्ट जार्ज का किला बनवाया।
- 1651 ई. में अंग्रेजों ने बंगाल के हुबली में अपनी व्यापारी कोठी खोली।
- 1661 ई. में ब्रिटिश राजकुमार चार्ल्स-II का विवाह पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन से हो गया और चार्ल्स-II ने बम्बई बंदरगाह को ब्रिटिश इस्ट इंडिया कम्पनी को 10 पौंड वार्षिक किराये पर दे दिया।
- 1698 ई. में कलकत्ता में फोर्ट विलियम किला का निर्माण प्रारम्भ किया।

  Remark :– कलकत्ता शहर की स्थापना जॉब चॉरनाक ने किया था।
- 1717 ई. में फरूखशियर ने अंग्रेजों को व्यापारिक छूट दे दिया। इसे अंग्रेजी साम्राज्य का मैग्नाकार्टा कहा जाता है।
- 1757 ई. में प्लासी के युद्ध के बाद अंग्रेजों ने बंगाल के क्षेत्र पर अप्रत्यक्ष रूप से शासन करने लगा। इस युद्ध के कारण अंग्रेजों को बंगाल में पैर जमाने का मौका मिल गया।
- 1759 ई. में अंग्रेजों ने वेदरा के युद्ध में डचों को पराजित कर दिया।
- 1760 ई. में वांडिवाश के युद्ध में अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों को बुरी तरह से पराजित कर दिया।
- 1764 के बक्सर के युद्ध के बाद 12 Aug 1765 को अंग्रेजों एवं शाहआलम-II के बीच इलाहाबाद की संधि हुई।
- इस संधि के तहत अंग्रेजों ने बंगाल के क्षेत्र में द्वैध शासन लगा दिया।
- इस प्रकार भारत में अंग्रेजों का विरोध करने वाली कोई बड़ी शक्ति नहीं बची।
- BEIC (ब्रिटिश इस्ट इंडिया कम्पनी) धीरे-धीरे मजबूत होने लगी किन्तु भ्रष्टाचार बढ़ गया था और राजा का नियंत्रण भी कम्पनी पर कमजोर पडने लगा था।
- अंग्रेजी शासन काल में बिहार अफीम उत्पादन हेतु प्रसिद्ध था।

➢ डेनिस ईस्ट इंडिया कम्पनी (1616)

- इन्होंने अपनी व्यापारिक कोठी केरल के ट्रावणकोर में स्थापित किया । दूसरी व्यापारिक कोठी बंगाल के श्रीरामपुर में स्थापित किया ।
- डेनिस के व्यापारिक कोठियों का विस्तार अधिक नहीं था। अंततः 1745 ई. में डेनमार्क ने अपनी सभी कोठियों को अंग्रेजों के हाथ बेच दिया।

➢ फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया

- यह सरकारी कम्पनी थी
- इसकी स्थापना 1664 ई. में राजा लुई 14वां के समय हुई थी।
- भारत में फ्रांसीसी कंपनी का संस्थापक कोल्वर्ट को माना जाता है।
- फ्रांसीसी ने अपनी पहली व्यापारिक कोठी 1669 ई. में सूरत में खोली।
- फ्रांसीसियों ने अपनी दूसरी व्यापारिक कोठी 1669 ई. में मसुलीपट्टनम में खोली।
- फ्रांसीसियों ने बीजापुर के शासक से आज्ञा लेकर 1673 में पाण्डिचेरी शहर की स्थापना की।
- पाण्डिचेरी की स्थापना फ्रांसिस मार्टिन ने किया।
- फ्रांसिस (फ्रैंको) मार्टिन को भारत में फ्रांसीसी बस्तियों का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।

- फ्रांसिस गवर्नर डूप्ले को 1742 ई. में भारत में फ्रांस का गवर्नर बनाया गया। इसे सहायक संधि का जनक कहा जाता है।
- इसी के समय में कर्नाटक युद्ध हुआ।
- फ्रांसिसियों का भारत में अधिक क्षेत्रों पर अधिकार नहीं था किन्तु वे आजादी के बाद तक भारत में रहे और 1956 ई. में भारत छोड़कर चले गए।

➢ **स्वीडीश ईस्ट इंडिया कम्पनी (1731)**

- ये अपना अधिक विस्तार नहीं कर सका और भारत से चले गये।

शहर	संस्थापक	मूल निवासी
बंबई	गराल्ड अंगियार	ब्रिटेन
कलकत्ता	जाब चारनाक	ब्रिटेन
दिल्ली	लुटियंस	ब्रिटेन
चंडीगढ़	ली कार्बुजिए	फ्रांस
पांडिचेरी	फ्रेंक मार्टिन	फ्रांस
हैदराबाद	मुहम्मद कुतुबशाह	भारत
मद्रास	फ्रांसीस डे	ब्रिटेन

महाद्वीप	खोजकर्त्ता	मूल निवासी
भारत	वास्कोडिगामा	पुर्तगाल
ब्राजील	पेड्रो अलवर्स कैब्रल	पुर्तगाल
न्यूजीलैंड	अबेल तस्मान	हॉलेण्ड
तस्मानिया	एवेल जंजून तस्मान	हॉलेण्ड
अमेरिका	क्रिस्टोफर कोलम्बस	स्पेन
अस्ट्रेलिया	कैप्टन जेम्स कुक	ब्रिटेन

❑❑❑

22. नवीन राज्यों का उदय (Rise of New Kingdoms)

अवध राज्य

- अवध के संस्थापक सआदत खाँ अथवा बुरहान-उल-मुल्क थे। इन्होंने अवध की स्थापना 1722 ई. में मुगलों से अलग हो कर किया।
- इन्होंने अपनी राजधानी फैजाबाद (लखनऊ) को बनाया।
- अवध के राजाओं को नबाब कहा जाता था।
- सआदत खाँ के समय 1739 ई. में इरान तथा एशिया का नेपोलियन कहा जाने वाला नादिर शाह ने अवध पर आक्रमण कर दिया। किन्तु अवध धन दौलत से कंगाल था। अत: सआदत खाँ ने नादिर शाह को दिल्ली पर आक्रमण के लिए उकसा दिया। जब नादिर शाह दिल्ली को लूटने के बाद वापस सआदत खाँ के पास कुछ धन देने के लिए आया तो उनके डर से सआदत खाँ ने आत्महत्या कर लिया।
- इसके मृत्यु के बाद उसके पुत्र सफदर जंग तथा शुजाउद्दौला के बीच उत्तराधिकार के लिए युद्ध हुआ और शुजाउद्दौला विजय हुआ। 1764 के बक्सर के युद्ध में तिलगुट सेना ने भाग लिया और पराजित हो गया।
- 1801 ई. में अवध ने लॉर्ड वेलेजली द्वारा प्रारंभ की गयी सहायक संधि को स्वीकार कर लिया।
- अवध के अन्तिम नवाब वाजिद अली शाह थे जिनको अंग्रेजों ने गिरफ्तार कर लिया और अवध पर कुशासन का आरोप लगाकर उसे अंग्रेजी क्षेत्र में मिला लिया और वाजिद अली शाह को कैद कर लिया जहाँ उनकी मृत्यु हो गई। यही कारण था कि वाजिद अली शाह की पत्नी वेगम हजरत महल ने 1857 के विद्रोह में भारतीय सैनिकों का अवध से नेतृत्व किया।
- विद्रोह समाप्त होने के बाद बेगम हजरत महल नेपाल चली गयी जहां उनकी मृत्यु हो गयी।

हैदराबाद

- स्वतन्त्र हैदराबाद की स्थापना 1724 ई. में निजाम-उल मुल्क अथवा चिनकिसिच खाँ ने मुगल बादशाह मुहम्मद शाह के समय किया। यहाँ के राजा को निजाम कहा जाता था।
- निजाम-उल-मुल्क ने 1725 ई. में हैदराबाद को अपनी राजधानी बनाया।
- एक हिन्दू दीनानाथ को निजाम-उल-मुल्क ने अपना 'दीवान' नियुक्त किया था।
- 1728 ई में मराठा पेशवा बाजीराव-I ने हैदराबाद पर आक्रमण किया और पालखेड़ा के युद्ध में निजाम को पराजित कर दिया।
- पेशवा तथा निजाम के बीच मुंशी शिवगांव की संधि हुयी इस संधि के तहत निजाम ने मराठों की अधीनता स्वीकार की और चौथ तथा सरदेशमुखी नामक कर देने लगा। जब 1798 ई. में लार्ड वेलेजली ने सहायक संधि प्रारम्भ किया तो उसे मानने वाला पहला राज्य हैदराबाद ही था।
- स्वतन्त्रता के बाद हैदराबाद (तेलंगाना वाला क्षेत्र) पाकिस्तान में मिलने की इच्छा जताई। किन्तु सरदार पटेल ने ऑपरेशन पोलो नामक पुलिस कार्यवाही से हैदराबाद को भारत में मिला लिया।

कर्नाटक

- कर्नाटक की स्थापना सादुतुल्ला ने किया। कर्नाटक पर अधि कार करने के लिए फ्रांसीस तथा अंग्रेज आपस में लड़ गए और 3 युद्ध हुआ।

➢ **प्रथम आंग्ल कर्नाटक युद्ध (1746-48)**

- इस युद्ध का कारण ऑस्ट्रिया के अधिकार को लेकर इंग्लैंड तथा फ्रांस के बीच युद्ध हुआ। जिस कारण उनकी कम्पनियां भारत में युद्ध कर ली। ऑस्ट्रिया का उत्तराधिकार का युद्ध ए-ला-शापल की संधि से समाप्त हुआ। इसी संधि के तहत भारत में प्रथम आंग्ल कर्नाटक युद्ध समाप्त हो गया।

➢ **द्वितीय आंग्ल कर्नाटक युद्ध (1749-54)**

- इस युद्ध का कारण फ्रांसिस गर्वनर डुप्ले का महात्वाकांक्षी होना था। इसने भारत में अग्रेंजो पर आक्रमण कर दिया। यह युद्ध पाण्डिचेरी के संधि के तहत समाप्त हुआ।

➢ **तृतीय आंग्ल कर्नाटक युद्ध (1756-63)**

- इस युद्ध का कारण यूरोप में चल रहे सात वर्षीय युद्ध को माना जाता है। यह युद्ध इंग्लैण्ड तथा फ्रांस के बीच मुख्य रूप से हुआ। इसी युद्ध के दौरान 1760 में वांडिवाश के युद्ध में अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों को बूरी तरह पराजित कर दिया और भारत से फ्रांसीसी सत्ता लगभग समाप्त हो गयी। यह युद्ध 1763 में पेरिस संधि के तहत समाप्त हो गयी। इस संधि के तहत चन्द्र नगर तथा पाण्डिचेरी पर फ्रांसीसियों का अधिकार रहा शेष क्षेत्र पर अंग्रेजो ने कब्जा कर लिया।

मैसूर राज्य

- मैसूर का राज्य पहले विजयनगर साम्राज्य का एक अंग था, परंतु 1565 ई. में तालकोटा के युद्ध के बाद वेंकट द्वितीय (1612 ई.) के समय मैसूर में वाड्यार राजवंश की स्थापना हुई।

- मैसूर राज्य की स्थापना हैदर अली ने 1755 ई० में किया। हैदर अली एक योग्य शासक था।
- मैसूर की राजधानी श्रीरंगपट्टनम था।
- इसने अपने साम्राज्य का विस्तार प्रारम्भ किया और यही अंग्रेजों तथा मैसूर के बीच युद्ध का कारण बना।
- फ्रांसीसियों की सहायता से हैदर अली ने डिंडीगुल में 1755 ई. में एक आधुनिक शस्त्रागार की स्थापना की।

➢ अंग्रेजों तथा मैसूरों के बीच लड़े गए युद्ध

● प्रथम आंग्ल मैसूर युद्ध (1767-69)

- हैदर अली ने अंग्रेजों के बढ़ते प्रभाव को दबाने के लिए अंग्रेजों के साथ यह युद्ध किया था।
- इस युद्ध में हैदर अली विजयी रहा इसमें अंग्रेजी सेना का नेतृत्व सर जनरल स्मिथ कर रहा था।
- यह युद्ध मद्रास की संधि से समाप्त हुआ।
- मद्रास की संधि की सारी शर्तें हैदरअली ने तय किया था। यही कारण है कि यह संधि सफल नहीं हो सकी और द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध को जन्म दे दिया।

● द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध (1780-84)

- इस युद्ध का कारण अंग्रेजों द्वारा हैदर अली का क्षेत्र माहे (पाण्डिचेरी) पर अधिकार करना था।
- इस युद्ध में हैदरअली मारा गया और उसका बेटा टीपू सुल्तान युद्ध को आगे बढ़ाया। यह युद्ध बिना किसी निर्णय के मंगलौर की संधि से समाप्त हो गया।

● तृतीय आंग्ल मैसूर युद्ध (1790-92)

- यह युद्ध टीपू सुल्तान ने लड़ा किन्तु इस युद्ध में टीपू सुल्तान पराजित हो गया और यह युद्ध श्रीरंगपट्टनम की संधि से समाप्त हो गया।

● चतुर्थ आंग्ल मैसूर युद्ध (1799)

- इस युद्ध में टीपू सुल्तान मारा गया और मैसूर के क्षेत्र पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया।
- इस युद्ध में लॉर्ड वेलेजली स्वयं सेना का नेतृत्व किया था।

संधि का Trick		
महा (मद्रास)	मंगल (मंगलोर)	श्री (श्रीरंगपट्टनम)
1	2	3

- टीपू सुल्तान ने फ्रांसीसियों के सहयोग से एक नव सेना का गठन किया और फ्रांस के जैकोबियन कल्व (फ्रांस का गरम दल) की सदस्यता ग्रहण की।
- फ्रांसीसी क्रांति के बाद टीपू सुल्तान ने अपनी राजधानी श्रीरंगपट्टनम में जैकोबिन क्लब बनवाया तथा राजधानी में स्वतंत्रता का वृक्ष लगवाया।
- टीपू सुल्तान एक धार्मिक उदार शासक था। इसने शंकराचार्य द्वारा बनवाए गये श्रृंगेरी पीठ जो की मैसूर में स्थित हैं का पुनर्निमाण करवाया।
- टीपू सुल्तान की अंगूठी पर राम लिखा था। टीपू सुल्तान के तोपों का आकार शेर की तरह था।
- टीपू सुल्तान कहता था कि 100 दिन के गीदड़ के जीवन से अच्छा है कि एक दिन के शेर का जीवन।

पंजाब राज्य

- पंजाब राज्य की स्थापना सुकरचकिया मिसल के राजा रणजीत सिंह ने किया।
- इसके समय 1798 तक अफगानिस्तान के शासक अहमद ने हमला किया। इस हमले के दौरान जमान शाह के कुछ तोप चिनाब नदी में गिर गये थे जिसे राजा रणजीत सिंह ने वापस जमान शाह को दे दिया।
- राजा रणजीत सिंह के इस उदारता से जमान शाह प्रसन्न हुआ और लाहौर को उपहार में दे दिया।
- 1809 ई. में रणजीत सिंह तथा चार्ल्स मेटकाफ के बीच अमृतसर की संधि हुई। इस संधि के तहत सतलज नदी को अंग्रेजों तथा पंजाब राज्य के बीच सीमा मान लिया गया।
- इस संधि का उद्देश्य रणजीत सिंह के साम्राज्य विस्तार पर रोक लगाना था।
- राजा रणजीत सिंह ने लाहौर को अपनी राजधानी बनाया।
- राजा रणजीत सिंह ने स्वर्ण मन्दिर पर सोने की चादर चढ़ायी।
- 1839 ई० में राजा रणजीत सिंह की मृत्यु हो गयी।
- अगला शासक खड़क सिंह बना तथा इन्होंने अपना वजीर (PM) ध्यानसिंह को बनाया।
- ध्यानसिंह एक धोखेबाज व्यक्ति था उसने अगले ही वर्ष 1840 में खड़क सिंह की हत्या कर दी।
- अगला शासक नैनीहाल बना। इसने भी अपना वजीर ध्यान सिंह को ही बनाया। ध्यानसिंह ने इसकी भी हत्या 1843 में कर दी।
- इसके बाद अगला शासक शेरसिंह बना किन्तु शेर सिंह की 1844 ई. में मृत्यु हो गयी और इनका अल्पायु पुत्र दिलीप सिंह अगला शासक बना।
- 1843 ई. में राजमाता जिंदन के संरक्षण में महाराजा रणजीत सिंह के अल्पवयस्क पुत्र दिलीप सिंह का राज्यारोहण किया गया।
- अंग्रेजों ने पंजाब पर अधिकार के लिए दो-दो युद्ध लड़े।

➢ प्रथम आंग्ल पंजाब युद्ध (1845-46)

- प्रथम आंग्ल-सिक्ख युद्ध मुख्यत: महारानी जिंदन की राजनीतिक महत्त्वाकांक्षा का परिणाम था।
- यह युद्ध भारत का गवर्नर जनरल लॉर्ड हॉर्डिंग के समय लड़ा गया था तथा इस समय भारत के प्रधान सेनापति जनरल गफ थे।

- इस युद्ध में अंग्रेज विजय हुए। यह युद्ध भोरेवाल की संधि के तहत समाप्त हुआ।

➢ **द्वितीय आंग्ल पंजाब युद्ध (1848-49)**

- इस युद्ध का कारण लार्ड डलहौजी की राज्य हड़पनीति थी। लार्ड डलहौजी ने पंजाब पर अधिकार के लिए चार्ल्स नेपियर नामक एक कुशल सेनापति भेजा था।
- यह चार्ल्स नेपियर युद्ध में विजय रहा और पंजाब पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। लार्ड डलहौजी कोहिनूर हीरा पंजाब राज्य से लेकर ब्रिटेन की रानी को भेज दिया।
- राजा रणजीत सिंह का अल्पायु पुत्र दिलीप सिंह को अंग्रेजों ने अच्छी शिक्षा के लिए लंदन भेज दिया और उसकी माता को 48000 रु० प्रति वर्ष पेंशन देकर शेखपुरा (जम्मू-कश्मीर) भेज दिया। इस प्रकार पंजाब पूरी तरह अंग्रेजों के अधीन हो गया।

कोहिनूर हीरा

- यह हैदराबाद के समीप गोलकुण्डा के खाने से निकला था तथा वारंगल के शासक प्रतापरुद्र देव के पास था जिससे मलिक काफूर ने छीन कर अलाउद्दीन खिलजी को दे दिया।
- खिलजी वंश के बाद यह हीरा तुगलक वंश के पास चला गया।
- तुगलक वंश से यह सैयद वंश और उसके बाद लोदी वंश के पास चला गया। लोदी वंश से यह मालवा के शासक के पास गया जिससे मुगलों ने छीन लिया।
- मुगल बादशाह मुहम्मद शाह से नादिर शाह ने छिन लिया और ईरान लेकर चला गया किन्तु पश्तुन दुरानियों ने नादिर शाह से कोहिनूर हीरा छीन लिया।
- पश्तुन दुरानी से पंजाब के सिख शासकों ने कोहिनुर हीरा छीन लिया। अंतत: लॉर्ड डलहौजी ने पंजाब के सिख शासकों से कोहिनूर हीरा लेकर महारानी विक्टोरिया के पास भेजा दिया। नीले रंग का यह कोहिनुर हीरा आज भी विक्टोरिया के राजमुकुट में है।

गोलकुण्डा → वारंगल → खिलजी → तुगलक → सैयद लोदी →
↓
सिख ← पश्तुन ← दुरानी ← नादिर शाह ← मुगल मालवा
└ डलहौजी → Victoria

बंगाल

- बंगाल राज्य की स्थापना मुर्शीद कुली खान ने किया। इन्होंने अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद को बनाया।
- इनकी मृत्यु 1727 ई. में हो गयी।
- शुजाउद्दीन अगला शासक बना किन्तु 1739 ई. में उनकी मृत्यु हो गयी।
- इसके बाद अलीवर्दी खान अगला नबाब बना। 1756 ई. में इसकी मृत्यु हो गयी।
- सिराजुद्दौला अगला शासक बना। सिराजुद्दौला का अपने ही परिवार में घसीटी बेगम से विवाद था। साथ ही साथ अपने पड़ोसी राजवल्लभाचार्य से भी विवाद था। इसी विवाद का फायदा उठाकर अंग्रेजों ने बंगाल के क्षेत्र में किला बनवाना प्रारम्भ किया। जिसे फोर्ट विलियम किला कहा गया। इस फोर्ट विलियम किला का प्रधान अधिकारी रोजर ड्रैक था।
- सिराजुद्दौला ने अचानक किला पर हमला कर दिया और वहाँ से 146 लोगों को पकड़ कर कलकत्ता के चन्द नगर नामक स्थान पर एक छोटे से घर में कैद कर दिया जिसमें 123 लोगों की मृत्यु हो गयी और मात्र 23 ही जीवित बचे। इस घटना को कालकोठरी (Black Hall) के घटना के नाम से जाना जाता है। इस घटना की जानकारी इतिहासकार हार्नवेल ने दिया। क्योंकि वह भी इसी 146 लोगों में से थे जो कैद किए गए थे।
- सिराजुद्दौला को हराने के लिए मद्रास का गर्वनर लार्ड क्लाईव बंगाल आया और उसने सिराजुद्दौला के सेनापति मीर जाफर तथा कोषाध्यक्ष (वित्तमंत्री) राय दुर्लभ को मिला लिया।
- 23 जून, 1757 को पं. बंगाल राज्य में हुगली नदी के किनारे प्लासी नामक स्थान पर प्लासी का युद्ध हुआ। इस युद्ध में सिराजुद्दौला मीर जाफर के कहने पर युद्ध से पहले ही लौट गया था। जिसकी रास्ते में हत्या कर दी गयी। और युद्ध के मैदान में मीर जाफर चुपचाप अंग्रेज का साथ देता रहा और अंग्रेज जीत गए।
- पूर्व शर्त के अनुसार मीर जाफर को बंगाल का नवाब बना दिया।
- अंग्रेजों ने मीर जाफर से धन लेना प्रारम्भ किया मीर जाफर ने भी उन्हें अत्यधिक धन दिया किन्तु धन जब समाप्त होने लगा तो मीर जाफर धन देने से कतराने लगा। इसी कारण अंग्रेजों ने मीर जाफर को हटाकर मीर कासिम को बंगाल का नवाब बना दिया। इसे बंगाल का प्रथम शांतिपूर्ण क्रांति कहते हैं।

दस्तक प्रणाली

- दस्तक एक प्रकार का शाही फरमान (राजा) था। जिस अंग्रेज के पास दस्तक होता था। उसे बंगाल के क्षेत्र में 'कर' में छूट दिया जाता था।
- अंग्रेजों ने इस दस्तक प्रणाली का दुरुपयोग प्रारम्भ करने लगा। जिस कारण मीर कासिम ने दस्तक प्रणाली को हो समाप्त कर दिया। इसी कारण अंग्रेज मीर काशिम का विरोध करना प्रारम्भ किया।
- मीर कासिम ने अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद से बिहार के मुंगेर लाया और मुंगेर में गोला बारूद का कारखाना खोला।
- अंग्रेजों को मीर कासिम की यह नीति पसंद नहीं आई और अंग्रेजों ने मीर कासिम को हटाकर मीर जाफर को पुन: बंगाल का नवाब बना दिया।

बक्सर का युद्ध

- मीरकासिम ने अब अवध के नवाब शुजाउद्दौला तथा दिल्ली के मुगल बादशाह शाह आलम-II के साथ मिलकर एक त्रिगुट (तीन गुटों वाली सेना) सेना का गठन किया।
- इस सेना का नेतृत्व शाह आलम-II कर रहा था, जिसका सामना बिहार के बक्सर में अंग्रेजों के साथ 21 अक्टूबर, 1764 ई. को हुआ। इसे ही बक्सर का युद्ध कहते हैं।
- इस युद्ध में अंग्रेजी सेना का नेतृत्व एक कुशल सेनापति हेक्टर मुनरो कर रहा था।
- इस युद्ध में त्रिगुट सेना पराजित हुई और अंग्रेज विजय हो गए।
- 1765 ई. में अंग्रेजों ने शाहआलम-II के साथ इलाहाबाद की संधि किया। इस संधि के तहत शाहआलम-II ने बिहार, बंगाल तथा उड़ीसा की दीवानी राजस्व अंग्रेजों को सौंप दी।
- इस प्रकार बंगाल के क्षेत्र में द्वैध शासन प्रारम्भ हो गया।
- इस समय कम्पनी का गर्वनर लॉर्ड रॉबर्ट क्लाईव था।
- लॉर्ड क्लाईव को भारत में द्वैध शासन का जनक कहते हैं। बंगाल का अंतिम नवाब मुबारक शाह था।
- इसके बाद बंगाल पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया।

आंग्ल-नेपाल युद्ध (1814-1816)

- लार्ड हेस्टिंग्स के समय कर्नल डेविड ऑक्टरलोनी ने गोरखाओं को 1816 ई. में पराजित किया। जिसके कारण 1816 ई. में अंग्रेज तथा नेपाल के बीच संगोली की संधि हुई। इस युद्ध में नेपाल के अमर सिंह थापा को आत्मसमर्पण करना पड़ा।

आंग्ल-बर्मा युद्ध

- अंग्रेज को बर्मा पर नियंत्रण करने हेतु तीन युद्ध करने पड़े।

● प्रथम आंग्ल-बर्मा युद्ध (1824-1826)

- 1824 में अंग्रेज सेनापति सर आर्चीबाल्ड कैम्पबेल ने रंगून पर अधिकार कर लिया।
- इस युद्ध का अंत 1826 में यान्डबू की संधि के तहत हुआ।
- इस युद्ध के समय अंग्रेज गवर्नर जनरल लार्ड एमहर्स्ट थे।
- यह ब्रिटिश भारतीय इतिहास का सबसे महंगा युद्ध था।

● द्वितीय आंग्ल-बर्मा युद्ध (1852)

- यह युद्ध लार्ड डलहौजी के शासन काल में लड़ी गई।
- इस युद्ध के तहत 1852 ई. में लोअर बर्मा और पीगू को अंग्रेजी राज्य में मिला लिया गया।

● तृतीय आंग्ल-बर्मा युद्ध (1885-1888)

- यह युद्ध लार्ड डफरिन के शासन काल में लड़ी गई।
- इस युद्ध के तहत बर्मा को अंतिम रूप से अंग्रेजी राज्य में मिला लिया गया।

Note :–

(i) भारत शासन अधिनियम 1935 ई. में बर्मा को भारत से पृथक करने का प्रावधान था, जिसके तहत 1937 ई. में बर्मा को भारत से अलग कर दिया गया।

(ii) आंग सन की सहयोगी यूनू के नेतृत्व में चले आन्दोलन के कारण 4 जनवरी 1948 को बर्मा को ब्रिटिश राज से आजादी मिली।

❑❑❑

Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR